e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, मंगलवार, 18 दिसंबर 2018, मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्ष दशमी, संवत् 2075 विक्रमी वर्ष-12, अंक-64, पृष्ठ-12, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण

शब्द शब्द संघर्ष

DNA

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/41982 संस्करण : लखनऊ राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक website : www.dnahindi.com डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18

जलवायु परिवर्तन पर अमेरिकी बहस का अंदाज

अभिमत

● प्रो. भरत राज सिंह

brsinghlko@gmail.com

क्या अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को अभी भी लगता है कि जलवायु परिवर्तन एक धोखाधड़ी है? एक भाषण में जलवायु पर बोलते हुए ट्रंप ने कहा था कि अमेरिका को पेरिस जलवायु समझौते के लिए पार्टी क्यों नहीं बनना चाहिए, इसलिए कि इस बारे में पूरी तरह से चर्चा नहीं हुई थी। एक बिंदु पर राष्ट्रपति ने वर्तमान जलवायु विज्ञान के लिए कुछ विशेष संदर्भ दिया। वे कहते हैं कि पेरिस समझौते के तहत यदि सभी देश अपने हिस्से का अनिवार्य ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लक्ष्य रखें तो परिणामस्वरूप वर्ष 2100 तक औसत वैश्विक तापमान में केवल 0.2 डिग्री की ही कमी लाई जा सकेगी। उनका मानना था कि शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में जो आंकड़े प्रस्तुत किए थे, वह पुराने और गलत तरीके से तैयार किए गए थे। ट्रंप के मौन ने यह सोचने के लिए प्रश्नचिन्ह छोड़ा है कि क्या राष्ट्रपति अभी भी अपने पहले के ट्वीट और टिप्पणियों पर अडिग हैं कि जलवायु परिवर्तन वास्तविक है या नहीं, यह एक गंभीर संदेह व्यक्त करता है। क्या वे अब भी मानते हैं कि यह अमेरिका को कम प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए एक चीनी साजिश है, जैसा कि उन्होंने नवंबर 2012 में ट्वीट किया था या यह एक पैसा बनाने की धोखाधड़ी है, जैसा कि उन्होंने दिसंबर 2015 की अभियान रैली में कहा था? यह सच है कि ट्रंप को कभी-कभी इस तरह की व्यापक निंदा में पुन: शामिल कर लिया जाता है। हालांकि हिलेरी क्लिंटन के साथ पहली प्रेसिडेंशियल यानी राष्ट्रपतीय बहस के दौरान उन्होंने कभी चीन को दोषी ठहराने वाली बात से इनकार कर दिया था। अपनी चुनावी जीत के कुछ ही समय बाद न्यूयॉर्क टाइम्स से साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि मानव गतिविधियों और जलवायु परिवर्तन के बीच कुछ कनेक्टिविटी यानी संबंध है। ट्रंप ने पेरिस समझौते से अपने को अलग करने की घोषणा के बाद पत्रकारों ने एक बार फिर से व्हाइट हाउस सहयोगियों को सार्वजनिक रूप से कदम उठाने के लिए काम करने को कहा और प्रश्न भी किया कि क्या राष्ट्रपति मानते हैं कि मानव गतिविधियां जलवायु परिवर्तन में योगदान देती हैं? यह भी कि क्या अमेरिकी शहर इसको लेकर अकेले चलेंगे? क्या यह ट्रंप को चोट पहुंचाता है? मीडिया ने 1 जून, 2017 को दो प्रशासनिक अधिकारियों के साथ एक पृष्ठभूमि सत्र के दौरान इसके बारे में पुन: पूछा। इसके अगले ही दिन उन्होंने सुबह एक टेलीविजन साक्षात्कार के दौरान व्हाइट हाउस सलाहकार केलीन कॉनवे से पूछा और दोपहर को पर्यावरण संरक्षण एजेंसी के प्रमुख स्कॉट प्रुत से भी प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान यह प्रश्न पूछा, लेकिन जवाब में केवल मुझे नहीं पता, मैं नहीं कह सकता या यह प्रासंगिक नहीं है जैसे उत्तर ही प्राप्त होते रहे। स्काट प्रुत का कई बार अपने बॉस यानी ट्रंप के विचारों पर महत्वपूर्ण मुद्दा होने के कारण ध्यान केंद्रित कराया गया कि पेरिस जलवायु समझौता देश के लिए अच्छा या बुरा था? इससे पहले 30 मई, 2017 को प्रेस सचिव शॉन स्पाइसर ने बताया था कि उन्हें जलवायु परिवर्तन के बारे में राष्ट्रपति ट्रंप के विचारों का पता नहीं है क्योंकि उन्होंने उनसे कभी नहीं पूछा था। पुन: उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें राष्ट्रपति से बात करने का मौका मिला था? स्पाइसर ने जवाब दिया- मुझे ऐसा करने का मौका नहीं मिला है। अमेरिकी पत्रकार एंथनी ज्यूरर के अनुसार, बाकी प्रेस कॉन्फ्रेंस एक विस्तारित पार्लर गेम जैसा था जिसमें प्रेस सचिव से पर्ची के माध्यम से जानने की कोशिश की गई कि शायद अनजाने में वे ट्रंप के विचारों पर कुछ प्रकाश डाल सकें परंतु इसका कोई फायदा नहीं हुआ। इस तथ्य से यह स्पष्ट हुआ कि जलवायु परिवर्तन पर ट्रंप की स्थिति को स्पष्ट करने में प्रशासनिक अमले की कोई रुचि नहीं है। परंतु ऐसी भ्रम की स्थिति क्यों? अक्सर राजनेताओं के सहयोगियों से ही वस्तुस्थिति के बारे में जानकारी मिल सकती है, क्योंकि राष्ट्रपति को भी उनके मूल समर्थकों की जरूरत होती है जो उनके साथ रहें है और जो आगे भी किसी न किसी माध्यम से उनसे जुड़े रहेंगे। जो लोग जलवायु परिवर्तन पर विश्वास नहीं करते हैं, वे वास्तव में राष्ट्रपति की पिछली टिप्पणियों को प्रमाण के रूप में देखते हैं कि वे सभी उनके आदमी हैं और अभी भी वे लोग बिना किसी स्पष्टता के ऐसा कहने के लिए उनके साथ खड़े हैं।

जलवायु परिवर्तन क्या है? पेरिस जलवायु सौदे में क्या है? इन प्रश्नों के पुन: आग्रह पर राष्ट्रपति से यह इजाजत मिलती है कि वह जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए कुछ स्थितियों के साथ तैयार हैं- क्या पेरिस समझौते पर पुनर्विचार किया जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन शायद एक समस्या है। यह उन अमेरिकियों के बहुमत को भी जानने की उत्सुकता है जो जलवायु परिवर्तन को एक असली वैश्विक खतरा मानते हैं और वे लोग अपनी चिंताओं को दूर करने की कोशिश भी कर रहे हैं।

यह दरअसल स्काट प्रुत जैसे प्रशासनिक प्रतिनिधियों को गुप्त सूचना देने वाला बना देता है कि अमेरिका ने कार्बन उत्पादन को कम कर दिया है। केवल यह एक कारण स्वीकार किया जाना कि मानव गतिविधि वैश्विक जलवायु को प्रभावित करती है, यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। व्हाइट हाउस में संचार टीमों के सबसे अनुभवी लोगों को जानने के लिए यह एक अच्छी खबर है, परंतु अकेले मिलने वाले व्यक्ति को चिंतित होना चाहिए कि अगली बार जब राष्ट्रपति से सवाल पूछा जाए तो वह कह नहीं सकता कि वे क्या कहेंगे। अमेरिकी मीडिया के इन प्रश्नों के बावजूद उनके राजनेताओं व प्रशासनिक प्रतिनिधियों द्वारा कैसे जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक विभीषिकाओं के कारणों को नकार कर पूरी दुनिया को गुमराह करने में अमेरिका लगा हुआ है। वह अपने व्यापार और ईंधन के उपयोग में कटौती नहीं करना चाहता, बल्कि दुनिया के दूसरे देशों से चाहता है कि वे सब कार्बन घटाने में अपनी सहभागिता बढ़ाएं और इसके लिए उसपर कोई दबाव न डाला जाए। मीडिया की स्वतंत्रता पर भी प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है। यहां तक कि अमेरिका में क्या हो रहा है, विश्व के अन्य देशों को सही समाचार नहीं मिल पा रहे हैं। क्या विश्व का एक शक्तिशाली देश जो प्रजातांत्रिक है, उसके द्वारा दुनिया भर के देशों को बेवकूफ बनाने का यह जीता जागता उदाहरण नहीं है? आज इस पर चिंतन करना अत्यंत आवश्यक है।